DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Sanskrit
S.R.A.P. college, Bara chakia
BRABU-Muzaffarpur

B.A. (Hons.) Part—I
Subject—Sanskrit
Paper—I

5×3 = 15 Marks

कारक सूत्र-व्याख्या
(चतुर्थी विभक्ति)

18. धारेरुत्तमर्णः (1/4/35)

उत्तर— धारि (ऋण लेना, उधार लेना) धातु के प्रयोग में जो उत्तमर्ण (महाजन या ऋणदाता) की सम्प्रदान संज्ञा होती है—यह सूत्रार्थ है। यथा—देवदत्तः रामाय शतं धारयति—देवदत्त ने राम से एक सौ उधार लिया है। यहाँ ऋणधारण करने के अर्थ में 'धारि' धातु का प्रयोग किया गया है, अतः उत्तमर्ण 'राम' की 'धारेरुत्तमर्णः' सूत्र से सम्प्रदान संज्ञा होकर चतुर्थी विभक्ति आयी। प्रश्न होता है कि उक्त सूत्र में उत्तमर्ण का ग्रहण क्यों किया? उत्तर है— ग्रहण न करने पर 'देवदत्ताय शतं धारयति ग्रामे'— इस वाक्य में ग्राम को भी उक्त सूत्र से सम्प्रदान संज्ञा हो जायेगी। करने पर तो यहाँ 'ग्राम' उत्तमर्ण न होने के कारण सम्प्रदान नहीं होता। उत्तमर्ण देवदत्त है, उसकी तो होती है।

— 0 —

क्रमशः जारी